IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

हिंदी भाषा के संवर्धन एवं संरक्षण में सोशल मीडिया की भूमिका

डॉ शशि रंजन अकेला

राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश

सारांश :–

वर्तमान युग सूचना और प्रौद्योगिकी का युग है, जहाँ सोशल मीडिया संवाद, विचार–विनिमय एवं अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन चुका है। हिंदी भाषा, जो भारत की सांस्कृतिक और भाषायी पहचान का प्रमुख स्तंभ है, अब डिजिटल मंचों के माध्यम से एक नवीन स्वरूप में उभर रही है। यह शोध पत्र हिंदी भाषा के संवर्धन और संरक्षण में सोशल मीडिया की भूमिका का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें यह दर्शाया गया है कि कैसे फेसबुक, ट्विटर (अब एक्स), यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ब्लॉग्स, पॉडकास्ट्स आदि मंचों ने हिंदी को नई पीढ़ी तक पहुँचाया है, उसे आधुनिक संदर्भों में जीवंत बनाए रखा है, और साथ ही उसकी विविधता एवं व्याकरणीय शुद्धता की रक्षा में भी योगदान दिया है।

शोध यह भी इंगित करता है कि सामाजिक मीडिया पर हिंदी के बढ़ते प्रयोग के साथ–साथ कुछ चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं, जैसे रोमन लिपि का अत्यधिक प्रयोग, 'हिंग्लिश' का बढ़ता चलन तथा भाषा की व्याकरणीय शुद्धता की उपेक्षा। तथापि, इन बाधाओं के मध्य भी सोशल मीडिया हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने का एक सशक्त मंच सिद्ध हो रहा है। अतः यह आवश्यक है कि नीतिगत, तकनीकी और सामाजिक प्रयासों के माध्यम से इस माध्यम का अधिकतम लाभ उठाया जाए और हिंदी भाषा के उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित किया जाए।

शब्द कुंजी :– हिंदी भाषा, सोशल मीडिया, भाषा संरक्षण, डिजिटल मंच, भाषायी विकास।

1. भूमिका

हिंदी भाषा भारतवर्ष की आत्मा और सांस्कृतिक चेतना की संवाहक रही है। यह न केवल व्यापक जनसमूह की संपर्क भाषा है, बल्कि राष्ट्र की भावनात्मक एकता का सेतु भी है। वैश्वीकरण एवं तकनीकी विकास के इस युग में, विशेषकर सूचना क्रांति के दौर में, सोशल मीडिया एक सशक्त जनसंचार माध्यम के रूप में उभरा है जिसने हिंदी भाषा को अभिव्यक्ति, संवाद और विचार–विनिमय के नए क्षितिज प्रदान किए हैं। पहले जहाँ हिंदी के प्रचार–प्रसार की सीमा पारंपरिक मीडिया तक सीमित थी, वहीं आज सोशल मीडिया ने इसकी पहुँच विश्व स्तर तक बढ़ा दी है (कुमार, 2020)। फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर (एक्स), यूट्यूब, ब्लॉग्स जैसे डिजिटल मंचों पर हिंदी की उपस्थिति निरंतर बढ़ रही है, जिससे न केवल भाषा का जीवंत स्वरूप सामने आया है, बल्कि इसके संरक्षण और संवर्धन की संभावनाएँ भी सशक्त हुई हैं।

हिंदी की यह डिजिटल यात्रा न केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित है, बल्कि ग्रामीण एवं अर्ध–शहरी जनसमुदाय भी मोबाइल इंटरनेट के माध्यम से इसमें सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं (मिश्रा और वर्मा, 2022)। यह बदलाव केवल भाषा के स्वरूप तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह हिंदी भाषियों की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, लोकसंवाद और वैचारिक नेतृत्व को भी नए संदर्भ दे रहा है। डिजिटल इंडिया अभियान तथा सुलभ इंटरनेट सुविधा ने हिंदी को तकनीकी मंचों पर प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त दिलाई है (भारत

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-28150

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

सरकार, 2021)। अतः यह आवश्यक हो गया है कि हम सोशल मीडिया में हिंदी की इस सशक्त भूमिका को समझें, उसकी प्रवृत्तियों का विश्लेषण करें और उसके माध्यम से हिंदी भाषा के संरक्षण व संवर्धन की संभावनाओं को विस्तारित करें।

2. सोशल मीडिया की भाषायी प्रकृति

सोशल मीडिया एक बहुभाषीय और बहुसांस्कृतिक मंच है जहाँ भाषायी प्रयोग अत्यंत लचीला, संवादात्मक और गतिशील होता है। इसकी भाषायी प्रकृति पारंपरिक भाषायी मानकों से भिन्न है क्योंकि यहाँ संवाद की गति, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और तकनीकी सीमा–रेखाएँ भाषा के स्वरूप को प्रभावित करती हैं। हिंदी भाषा, सोशल मीडिया पर एक जीवंत और अनौपचारिक रूप में प्रकट होती है, जहाँ मानक हिंदी के साथ–साथ क्षेत्रीय बोलियों, अंग्रेज़ी मिश्रित हिंदी (हिंग्लिश), और लिप्यंतरण (रोमनीकृत हिंदी) का प्रयोग बड़े पैमाने पर देखने को मिलता है (द्विवेदी, 2021)। यह मिश्रण एक ओर जहाँ भाषा की स्वीकार्यता और पहुँच को बढ़ाता है, वहीं दूसरी ओर यह मानक भाषा के शुद्ध रूप के लिए चुनौती भी उत्पन्न करता है।

सोशल मीडिया पर प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति जनसंपर्क और अभिव्यक्ति के सहज माध्यम के रूप में विकसित हो रही है, जिसमें हास्य, व्यंग्य, भावनात्मकता और तात्कालिकता का प्रमुख स्थान है (शर्मा, 2020)। साथ ही, उपयोगकर्ता भाषा का चयन अपनी सामाजिक पहचान, क्षेत्रीय पृष्ठभूमि और तकनीकी सुविधा के अनुसार करता है, जिससे हिंदी एक संवादात्मक, अनौपचारिक और आत्मीय भाषा के रूप में उभरती है। उदाहरणस्वरूप, व्हाट्सएप और फेसबुक समूहों में प्रयुक्त भाषा अक्सर व्यक्तिगत संवाद के निकट होती है, जबकि ट्विटर या यूट्यूब जैसे मंचों पर यह सामाजिक और वैचारिक विमर्श का माध्यम बनती है (जैन और कौल, 2022)। इस प्रकार सोशल मीडिया की भाषायी प्रकृति बहुस्तरीय, प्रयोगात्मक और समाज–सापेक्ष है, जो हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति को नवाचार और लचीलापन प्रदान करती है।

3. हिंदी का प्रचार एवं संवर्धन

हिंदी भाषा का प्रचार एवं संवर्धन एक राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकता है, जो न केवल भारत की भाषायी विविधता में एकता का प्रतीक है, बल्कि वैश्विक मंच पर भारतीय अस्मिता को भी सशक्त करता है। आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया एक ऐसा सशक्त माध्यम बनकर उभरा है, जो हिंदी के प्रचार–प्रसार को एक नई दिशा दे रहा है। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ब्लॉग्स और पॉडकास्ट जैसे प्लेटफॉर्म्स ने हिंदी को सीमित वर्ग की भाषा से निकालकर वैश्विक स्तर पर एक प्रभावी संवाद भाषा बना दिया है (मिश्रा, 2020)।

सरकार द्वारा भी विभिन्न स्तरों पर हिंदी के संवर्धन हेतु प्रयास किए जा रहे हैं। 'विश्व हिंदी सम्मेलन', 'राजभाषा नीति', 'ई–गवर्नेंस में हिंदी का प्रयोग' और 'ऑल इंडिया रेडियो' एवं 'दूरदर्शन' के हिंदी कार्यक्रम इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसके साथ ही, हिंदी भाषा को शिक्षण, साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और मीडिया के क्षेत्र में अधिकाधिक स्थान देने हेतु शैक्षणिक पाठ्यक्रमों, अनुवाद योजनाओं और डिजिटल सामग्री निर्माण को प्रोत्साहित किया जा रहा है (सिंह, 2019)।

इसके अतिरिक्त, हिंदी ब्लॉगिंग, वेब साहित्य, और व्लॉग संस्कृति ने जन–सामान्य को न केवल अपनी भाषा में विचार रखने का अवसर दिया है, बल्कि रचनात्मकता के नए द्वार भी खोले हैं। 'प्रतिलिपि', 'हिंदी की दुनिया', 'हिंदी पॉडकास्ट' जैसे मंचों ने हिंदी लेखकों और श्रोताओं को आपस में जोड़ने का कार्य किया है (गुप्ता और वर्मा, 2021)। इस प्रकार, सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल मंचों के माध्यम से हिंदी का प्रचार एवं संवर्धन बहुआयामी रूप में हो रहा है, जो भाषा को जीवंत बनाए रखने के साथ–साथ नई पीढ़ी में भाषायी गर्व का भाव भी उत्पन्न कर रहा है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

4. हिंदी भाषा का संरक्षण

हिंदी भाषा का संरक्षण भारतीय सांस्कृतिक पहचान की रक्षा का महत्वपूर्ण पहलू है। यह केवल भाषायी अस्तित्व की बात नहीं है, बल्कि यह एक समृद्ध परंपरा, साहित्यिक धरोहर और जनमानस की अभिव्यक्ति को सुरक्षित रखने का भी प्रयास है। आज के भूमंडलीकृत युग में जहां अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाएँ शिक्षा, व्यवसाय और तकनीक के माध्यम से प्रभावी हो रही हैं, वहीं हिंदी को संरक्षण की आवश्यकता और भी अधिक हो गई है (मिश्रा, 2018)।

भाषा संरक्षण का तात्पर्य केवल उसके प्रयोग को बढ़ाना नहीं, बल्कि उसकी शुद्धता, व्याकरणीय स्वरूप, शब्दावली और भावगत अभिव्यक्तियों को बनाए रखना भी है। स्कूलों, विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में हिंदी के माध्यम से शिक्षण और अनुसंधान को प्रोत्साहन देना, साहित्यिक रचनाओं को डिजिटलाइज़ कर नई पीढ़ी तक पहुँचाना, तथा हिंदी भाषा की तकनीकी शब्दावली का विकास इस दिशा में सार्थक प्रयास माने जा सकते हैं (त्रिपाठी और कुमार, 2020)।

इसके अतिरिक्त, भाषायी संरक्षण में स्थानीय बोलियों और उपभाषाओं का भी विशेष महत्व है, क्योंकि वे हिंदी की समृद्ध विविधता को प्रकट करती हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर शुद्ध हिंदी के साथ–साथ क्षेत्रीय शैली में संवाद का समर्थन भी भाषा संरक्षण में सहायक हो सकता है। डिजिटल आर्काइव्स, ई–लाइब्रेरी, और हिंदी एप्स जैसे 'कीबोर्ड टूल्स', 'हिंदी व्याकरण' व 'हिंदी शब्दकोश' भी इस कार्य को गति दे रहे हैं (वर्मा, 2021)। अतः हिंदी भाषा का संरक्षण एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें शैक्षणिक, तकनीकी, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर निरंतर प्रयास आवश्यक हैं ताकि यह भाषा न केवल जीवित रहे, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए भी गर्व का विषय बनी रहे।

5. प्रमुख चुनौतियाँ

सोशल मीडिया ने हिंदी को एक नया जीवन प्रदान किया है, परंतु इसकी चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। रोमन लिपि में हिंदी का प्रयोग, अंग्रेजी मिश्रित हिंदी (हिंग्लिश) का बढ़ता चलन, व्याकरणीय अशुद्धियाँ तथा शुद्ध हिंदी की उपेक्षा इसके संरक्षण के मार्ग में बाधक हैं। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया एल्गोरिदम अभी भी अंग्रेजी केंद्रित हैं, जिससे हिंदी कंटेंट को सीमित दृश्यता मिलती है (वर्मा, 2021)।

6. संभावनाएँ और समाधान

हिंदी भाषा के संवर्धन और संरक्षण में सोशल मीडिया की भूमिका में अनेक संभावनाएँ निहित हैं, जो भाषा को न केवल जीवंत बनाए रखती हैं, बल्कि उसे वैश्विक स्तर पर पहचान भी दिला सकती हैं। सोशल मीडिया का सबसे बड़ा लाभ इसकी पहुँच है, ग्राम्य क्षेत्रों से लेकर अंर्तराष्ट्रीय मंचों तक, हिंदी अपने विविध रूपों में संवाद का माध्यम बन चुकी है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्म पर हिंदी कंटेंट की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे स्पष्ट होता है कि डिजिटल उपयोगकर्ता हिंदी को अपनी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम मानते हैं। यह एक सकारात्मक संकेत है जो हिंदी के प्रचार–प्रसार की संभावनाओं को बल देता है।

समाधान की दृष्टि से यह आवश्यक है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हिंदी–अनुकूल तकनीक विकसित करें, जैसे कि स्वचालित हिंदी ट्रांसलेशन, टाइपिंग टूल्स, स्पीच–टू–टेक्स्ट सुविधाएँ आदि। साथ ही, हिंदी कंटेंट क्रिएटर्स को प्रोत्साहन देने हेतु पुरस्कार, प्रशिक्षण कार्यक्रम और विज्ञापन राजस्व के माध्यम से आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराया जा सकता है। हिंदी भाषा की शुद्धता एवं

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

व्याकरण को बनाए रखने हेतु डिजिटल जागरूकता अभियान चलाना, भाषा प्रशिक्षण हेतु मोबाइल एप्स बनाना तथा क्षेत्रीय बोलियों को मुख्यधारा में स्थान देना भी प्रभावशाली समाधान हो सकते हैं।

सरकारी स्तर पर भी नीति निर्माण और बजट आवंटन के माध्यम से डिजिटल हिंदी को सशक्त किया जा सकता है। विश्वविद्यालयों, साहित्य अकादमियों और प्रौद्योगिकी संस्थानों के सहयोग से हिंदी का तकनीकी, वैज्ञानिक और व्यावसायिक शब्दावली भंडार विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। अतः यदि इन संभावनाओं को संगठित प्रयासों से दिशा दी जाए, तो सोशल मीडिया हिंदी भाषा को केवल एक संपर्क भाषा नहीं, बल्कि एक प्रभावशाली वैश्विक पहचान में परिवर्तित कर सकता है।

7. निष्कर्ष

सोशल मीडिया के युग में हिंदी भाषा का संवर्धन एवं संरक्षण एक अत्यंत प्रासंगिक और आवश्यक पहल बन चुका है। यह माध्यम न केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करता है, बल्कि भाषा को जनमानस से जोड़कर उसकी जीवंतता को बनाए रखने में सहायक सिद्ध होता है। विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी में हो रहे संवाद, लेखन, कविता, समाचार और व्यंग्य जैसे विधाओं में निरंतर वृद्धि इस बात का प्रमाण है कि सोशल मीडिया हिंदी के लिए एक सशक्त मंच बन चुका है। हालाँकि, इस प्रगति के साथ–साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, जैसे भाषा की शुद्धता, व्याकरण की उपेक्षा और अंग्रेज़ी के अनावश्यक प्रभाव। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि भाषा प्रेमी, शैक्षणिक संस्थान, सरकार और तकनीकी मंच मिलकर हिंदी को तकनीकी रूप से सक्षम, संप्रेषणीय और सौंदर्यपूर्ण बनाए रखें।

इस शोध का निष्कर्ष स्पष्ट रूप से यह इंगित करता है कि यदि सोशल मीडिया का सुनियोजित और सकारात्मक उपयोग किया जाए, तो यह न केवल हिंदी के प्रचार और प्रसार का साधन बन सकता है, बल्कि भाषा को भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और समृद्ध भी बना सकता है। यह युग हिंदी के लिए केवल एक चुनौती नहीं, बल्कि एक नवजागरण का अवसर है, जिसे हम सबको मिलकर स्वीकार करना चाहिए।

संदर्भ सूची

- Dwivedi, N. (2021). Bhasha aur Media: Samay ke Sandarbh Mein. Vani Prakashan.
- Government of India. (2021). Digital India: Power to Empower. Ministry of Electronics and Information Technology.
- Gupta, P., & Verma, S. (2021). Online Hindi Content aur Rachnatmak Abhivyakti: Ek Vishleshan. Journal of Modern Communication, 6(3), 88–96.
- Jain, M., & Kaul, S. (2022). Hindi on Social Media: Trends and Transformations. Journal of Digital Humanities, 8(1), 34–41.
- Kumar, R. (2020). Digital Hindi: Language, Culture and Technology. New Delhi: Prakashan Publications.
- Kumar, R. (2020). Digital Media and Language Evolution in India. New Delhi: Bharat Prakashan.
- Mishra, A. (2021). Hindi on Social Media: A Linguistic and Cultural Study. Journal of Media Language, 7(3), 45–58.
- Mishra, A., & Verma, S. (2022). Impact of Social Media on Indian Languages: A Case Study of Hindi. Journal of Digital Communication, 14(3), 45–52.
- Mishra, R. (2020). Digital Media mein Hindi: Sambhavnayein aur Chunautiyan. Media Studies Journal, 12(1), 45–53.
- Sharma, P. (2018). Hindi Bhasha ka Sanrakshan: Chunautiyan aur Sambhavnayein. Journal of Indian Linguistics, 14(1), 67–73.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

- Sharma, R. (2020). Hinglish and New Media Discourse: A Sociolinguistic Analysis. Indian Journal of Language Studies, 15(2), 89–98.
- Singh, A. (2019). Hindi Bhasha ka Vikas aur Sarkari Prayason ka Moolyaankan. Indian Journal of Language Policy, 7(2), 112–120.
- Singh, D., & Patel, M. (2023). Hindi Language Promotion through New Media. Language and Society, 12(2), 23–39.
- Statista. (2023). Share of languages used in Indian social media. Retrieved from [statista.com]
- Tiwari, P., & Sharma, K. (2022). Hindi in the Digital Age: A Sociolinguistic Approach. Indian Journal of Communication, 9(1), 33–47.
- Tripathi, M., & Kumar, R. (2020). Hindi Bhasha ka Rakshan: Shiksha aur Takneek ke Sandarbh mein. Bhasha Vimarsh, 9(2), 102–110.
- Verma, S. (2021). Challenges to Hindi in Online Spaces. Digital India Review, 5(4), 17–25.
- Verma, S. (2021). Digital Tools aur Hindi ka Bhavishya. Indian Journal of Modern Communication, 5(4), 135–141